Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
April to June 2024, E-Journal, Vol. I, Issue XLVI, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के नेतृत्व व्यवहार का उनके पेशेवर सामंजस्य के सहसम्बन्ध का अध्ययन

प्रीती साहू* डॉ. पार्वती यादव**

* पीएच. डी. शोधार्थी (शिक्षा) डॉ. सी. वी. रामन् विश्वविद्यालय, करगीरोड, कोटा, बिलासपुर (छ.ग.) भारत
** असिस्टेण्ट प्रोफेसर (शिक्षा) डॉ. सी. वी. रामन् विश्वविद्यालय, करगीरोड, कोटा, बिलासपुर (छ.ग.) भारत

शोध सारांश – पेशेवर सामंजस्य से तात्पर्य किसी व्यवसाय पेशे के अनुकूलित व्यवहार प्रदर्शित करना तथा अपने काम का सुचारु रुप से संचालन करना। नेतृत्व व्यवहार, पेशेवर सामंजस्य के महत्व को देखते हुए शोधार्थी की इनके परस्पर सम्बन्ध एवं परस्पर पड़ने वाले प्रभाव को जानने में रुचि उत्पन्न हुई अत: शोधार्थी द्वारा शोध के विषय के रुप में शिक्षको के नेतृत्व व्यवहार का उनके पेशेवर सामंजस्य पर प्रभाव का अध्ययन का चयन किया गया। प्रस्तुत शोध में सरकारी एवं गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के 400 शिक्षकों को लिया जाएगा। जिसमें 200 शिक्षक सरकारी और 200 गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों न्यादर्श के रुप में लिया गया। परिकल्पनाओं के परीक्षण हेतु S. Arul Lawrence – Teachers Leadership Behavior Scale (TLBS-LA) और H. Rizvi – Teachers Professional Adjustment Inventory (TPAI-RHA) नामक शोध उपकरण का प्रयोग किया गया है।

शब्द कुंजी– माध्यमिक विद्यालय, शिक्षक, नेतृत्व व्यवहार एवं पेशेवर सामंजस्य.....।

प्रस्तावना – शिक्षा का औपचारिक साधन विद्यालय है। विद्यालय से संस्कार, संस्कार से मनुष्य और मनुष्य से सामाजिक विकास होता है। प्रत्येक राष्ट्र अथवा समाज की अपनी ऐतिहासिक, भौगोलिक, सामाजिक, राजनैतिक और आर्थिक स्थिति, परिस्थिति एवं समस्याएं होती है, परम्पराएं होती है, आदर्श एवं संस्कृति होती है और इन्हीं के अनुरूप शिक्षा व्यवस्था होती है ताकि वह इन सबका आने वाली पीढ़ी को हस्तान्तरण कर सके। हस्तान्तरण के लिए विद्यालय सर्वोतम साधन और शिक्षक सर्वोत्तम माध्यम है। विद्यालय में अध्यापक की नेतृत्व व्यवहार, सहयोगी प्रवृत्ति इस कार्य को सम्पन्न कराने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है।

शिक्षक को शैक्षणिक विचार, विषयवस्तु और अर्थपूर्ण शिक्षा को स्वतंत्र रूप से निभाने के व्यावहारिक कौशल से युक्त दृष्टा होना चाहिए। वस्तुत: शिक्षण व्यवसाय को पेशेवर की प्रतिष्ठा देने के लिए आवश्यक है कि इस व्यवसाय में वही व्यक्ति शामिल हो जिसने इस व्यवसाय को चुना है न कि संयोगवश इस पेशे में है।

नेतृत्व आज शिक्षा के सबसे अधिाक चर्चित मुद्दों में से एक है। नेतृत्व व्यवहार को अलग–अलग दृष्टिकोणों से परिभाषित किया गया है। व्यवहारवादी प्रबन्धशास्त्रियों ने इसे दूसरे व्यक्तियों को प्रभावित करने की प्रक्रिया के रुप में परिभाषित किया है वहीं अन्य प्रबन्धशास्त्रियों ने इसे उद्देश्य प्राप्ति के लिए दिशा निर्देशन देने के रुप में परिभाषित किया है। सामान्य शब्दों में नेतृत्व का आशय किसी व्यक्ति के उस गुण से है, जिसके माध्यम से वह अन्य व्यक्तियों का मार्गदर्शन करता है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि नेतृत्व या नेतृत्व व्यवहार वह व्यक्तिगत गुण है, जिससे एक व्यक्ति किसी दूसरे व्यक्ति की इच्छा को इस प्रकार प्रभावित करता है कि वह संस्था के उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिये स्वैच्छिक रूप से उत्साहपूर्वक तैयार हो जाये। यह दूसरों को प्रभावित करने तथा उनके साथ पूर्ण सहयोग व्यवहार करने का कार्य है तथा इसमें अन्य व्यक्तियों की क्रियाओं का मार्गदर्शन किया जाता है। एक शिक्षक का नेतृत्व व्यवहार उसके व्यवहार के विभिन्न पक्षों को प्रभावित करता है। जैसे– समायोजन आत्म विश्वास, आत्म अभिव्यक्ति इत्यादि। शिक्षक की पेशेवर सामंजस्य भी संभवत: नेतृत्व व्यवहार से प्रभावित हो सकता है। पूर्व में किए गय कुछ शोध भी इसकी पुष्टि करते है। पेशेवर सामंजस्य से तात्पर्य किसी व्यवसाय पेशे के अनुकूलित व्यवहार प्रदर्शित करना तथा अपने काम का सुचारु रुप से संचालन करना। नेतृत्व व्यवहार, पेशेवर सामंजस्य के महत्व को देखते हुए शोधार्थी की इनके परस्पर सम्बन्ध एवं परस्पर पड़ने वाले प्रभाव को जानने में रुचि उत्पन्न हुई अत: शोधार्थी द्वारा शोध के विषय के रुप में शिक्षको के नेतृत्व व्यवहार का उनके पेशेवर सामंजस्य के सहसम्बन्ध का अध्ययन का चयन किया गया।

सम्बन्धित शोध साहित्य का अध्ययन – शोधकर्ता द्वारा नेतृत्व व्यवहार, पेशेवर सामंजस्य तथा आत्म प्रभावकारिता से सम्बन्धित पूर्व में किए गए विभिन्न शोध की समीक्षा की गई है। शोधकर्ता द्वारा नेतृत्व व्यवहार से सम्बन्धित समीक्षा में देखा गया कि नदीम एन. (2012) द्वारा संस्था के सन्दर्भ में शिक्षकों के नेतृत्व व्यवहार तथा शैली का अध्ययन किया गया है। मल्होत्रा एवं भाटिया (2019) के द्वारा प्रधानाचार्य के नेतृत्व व्यवहार तथा शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता के बीच सम्बन्ध का अध्ययन किया गया है तथा परिणामस्वरुप इनके मध्य सार्थक सहसम्बन्ध पाया गया । इसी प्रकार इस्बियन्ती (2016) के द्वारा क्रीडा खण्ड में शिक्षक के नेतृत्व व्यवहार का अध्ययन किया गया है तथा अध्ययन के माध्यम से शिक्षक के कक्षा एवं कक्षा के बाहर के नेतृत्व व्यवहार के महत्व को उजागर किया गया

है।

शोधकर्ता द्वारा पेशेवर सामंजस्य से सम्बन्धित अध्ययन की समीक्षा करने पर देखा गया कि पार्थीपन एवं वंकेटराधानम (2017) ने शिक्षकों के पेशेवर सामंजस्य का उनके शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन किया तथा यह पाया कि पेशेवर सामंजस्य तथा शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति में कोई सम्बन्ध नही है। दुचेवा (2005) ने शिक्षकों के कैरियर विकास में पेशेवर सामंजस्य की भूमिका का अध्ययन किया। हैदर (2012) ने शिक्षकों की शैक्षणिक योग्यता वार व्यवसायिक समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन किया।

शोधकर्ता द्वारा शिक्षकों की आत्म प्रभावकारिता से सम्बन्धित शोध की समीक्षा करने पर पाया गया कि मेहलर (2015) ने शिक्षकों की आत्म प्रभावकारिता और उत्साह के लिए सीखने के अवसर का अध्ययन किया। क्लार्क एवं बेट्स (2003) ने व्यावसायिक विकास के सन्दर्भ में स्वाप्रभावकारिता, विश्वास तथा शिक्षक प्रभावकारिता का अध्ययन किया। शोधकर्ता द्वारा शोध की समीक्षा द्वारा यह पाया गया कि नेतृत्व व्यवहार, तथा पेशेवर सामंजस्य के मध्य सहसम्बन्ध का चरों के साथ अध्ययन किया गया है तथा शोधकर्ता द्वारा इन्ही चरों पर अध्ययन करने का निश्चय किया गया है।

समस्या कथन – माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के नेतृत्व व्यवहार का उनके पेशेवर सामंजस्य के सहसम्बन्ध का अध्ययन।

अध्ययन का औचित्य – अपने घर के अतिरिक्त विद्यालय ही एक मात्र ऐसा स्थान है जहाँ शिक्षक सबसे अधिक समय व्यतीत करता है। वही शिक्षक अपने ज्ञान तथा कौशल का विकास करता है। एक शिक्षक की नेतृत्व व्यवहार का पेशेवर सामंजस्य पर प्रभाव पड़ना स्वाभाविक है। वास्तव में शिक्षक का नेतृत्व व्यवहार अत्यन्त प्रमुख गुण है। शिक्षकों का नेतृत्व व्यवहार जितना अच्छा होगा उनके पेशेवर सामंजस्य उतना ही अधिक होगा।

शिक्षक में वे सभी आवश्यक गुण निहित होने चाहिए जिससे शिक्षकों के अनुकूल वातावरण पठन–पाठन सम्भव हो सके। शिक्षक अपने आप को उस विद्यालय के दिशा–निर्देशों के अनुकूल ढाल सके तथा अपने पेशे के कार्य को उच्च कोटि तक ले जाने में समर्थ हो सके। नेतृत्व व्यवहार से सम्बन्धित शोध के अध्ययनों से भी यह संकेत मिलता है कि शिक्षक का नेतृत्व व्यवहार उनके पेशेवर सामंजस्य को प्रभावित करता है।

सम्बन्धित साहित्य के अध्ययन में यह भी पाया गया कि शिक्षकों के नेतृत्व व्यवहार, पेशेवर सामंजस्य का अन्य चरों के साथ पूर्व में अध्ययन किए गए है परन्तु इन दोनों चरों का एक साथ अध्ययन नही किया गया है। इसीलिए शोध पत्र के विषय के रूप में **'माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के नेतृत्व व्यवहार का उनके पेशेवर सामंजस्य के सहसम्बन्ध का अध्ययन'** को लिया है।

अध्ययन का उद्देश्य :

1. माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के नेतृत्व व्यवहार एवं उनके पेशेवर सामंजस्य के मध्य सार्थक सहसम्बन्ध का अध्ययन करना।
2. माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के उच्च औसत और निम्न नेतृत्व व्यवहार का उनके पेशेवर सामंजस्य पर मुख्य एवं अन्त:क्रियात्मक प्रभाव का अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पनाएँ :

Ho 1. माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के नेतृत्व व्यवहार एवं उनके पेशेवर सामंजस्य के मध्य सार्थक सहसम्बन्ध नही पाया जायेगा।

Ho 2: माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के उच्च औसत और निम्न नेतृत्व व्यवहार का उनके पेशेवर सामंजस्य पर मुख्य एवं अन्त: क्रियात्मक प्रभाव नही पाया जायेगा।

शोध प्रविधि– किसी भी अनुसंधान में सत्य की प्राप्ति के लिए एक शोध विधि को निश्चित करना होता है। वर्तमान में प्रस्तुत शोध अध्ययन में **सर्वेक्षण विधि** का प्रयोग किया जाएगा। इसे वर्णानात्मक अनुसंधान के नाम से भी जाना जाता है। वर्णनात्मक अनुसंधान वह प्रक्रिया है जिसके अंर्तगत परिस्थितियों का वर्णन और विश्लेषण किया जाता है।

सांख्ययिकी विधि– संकलित किए गये ऑकड़ों की प्रकृति के अनुसार उपयुक्त सांख्ययिकी विधियों का प्रयोग किया गया है।

जनसंख्या एवं न्यादर्श – 'जनसंख्या का अर्थ इकाईयों के समूह से होता हैं अर्थात इकाईयों के पूर्ण समूह को जिसके लिए चर का मान निकालना अभीष्ट हैं, जनसंख्या कहलाता हैं।' प्रस्तुत अध्ययन बिलासपुर जिले के माध्यमिक स्तर के विद्यालय में कार्यरत शिक्षकों को जनसंख्या के रुप में लिया गया है। प्रस्तुत शोध में शोधार्थी ने अपने अध्ययन के लिए बिलासपुर जिले के माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों का चयन किया। न्यादर्श हेतु शोधार्थी ने 'यादृच्छित न्यादर्श विधि' (Randam Sampling Method) का प्रयोग किया है।

प्रस्तुत शोध में सरकारी एवं गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के 400 शिक्षकों को लिया जाएगा। जिसमें 200 शिक्षक सरकारी और 200 गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों न्यादर्श के रुप में लिया गया। न्यादर्श की संख्या को शोध गुणवत्ता की आवश्यकता के अनुसार बढ़ाया या घटाया जा सकता है।

प्रयुक्त उपकरण –

1. S. Arul Lawrence – Teachers Leadership Behavior Scale (TLBS-LA)
2. Vishal Sood and Sapna Sen- Teacher Self Efficacy Scale (TSES-SVSS)
3. H. Rizvi – Teachers Professional Adjustment Inventory (TPAI-RHA)

आंकड़ो का विश्लेषण और व्याख्या –

Ho 1. माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के नेतृत्व व्यवहार एवं उनके पेशेवर सामंजस्य के मध्य सार्थक सहसम्बन्ध नही पाया जायेगा।

सारणी 1 (अगले पृष्ठ पर देखे)

व्याख्या– सारणी क्रमांक 1 से स्पष्ट होता है कि शिक्षकों के नेतृत्व व्यवहार एवं उनके पेशेवर सामंजस्य के बीच सहसंबंध गुणांक r = 0.95है। df =798 पर r का सारणी मूल्य 0.05 व 0.01 सार्थकता स्तर पर क्रमश: 0.07व 0.09पाया गया जो कि दोनो सारणी मूल्यों से अधिक है अत: यह दोनो चरों के मध्य धनात्मक सहसंबंध दर्शाता है। अत: यह परिकल्पना 0.01 एवं 0.05 दोनो ही स्तर पर अस्वीकृत की जाती है।

निष्कर्ष–अत: हमारी परिकल्पना क्रमांक –2 माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के नेतृत्व व्यवहार एवं पेशेवर सामंजस्य के मध्य सार्थक सहसम्बन्ध नही पाया जायेगा**अ** अस्वीकृत होती है।

Ho 2. माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के उच्च औसत और निम्न नेतृत्व

व्यवहार का उनके पेशेवर सामंजस्य पर मुख्य एवं अन्त: क्रियात्मक प्रभाव नही पाया जायेगा।

सारणी2 (निचे देखे)

$\Sigma X = \Sigma X1+\Sigma X2+\Sigma X3$
N= n1+ n2+ n3
Step 1: Correction(C)
Step 2 : Total Sum of Squares (SST)
Step 3 : Sum of squares between gropus (SSB)
Step 4 : Sum of Squares Between Groups (SSW)

निष्कर्ष – नेतृत्व व्यवहार वाले शिक्षकों के पेशेवर सामंजस्य में सहसम्बन्ध पाया गया। शिक्षकों का नेतृत्व व्यवहार जितना अधिक प्रभावशाली व विद्यार्थियों के अनुकूल होगा, उनका पेशेवर सामंजस्य उतना अधिक प्रभावपूर्ण तरीके से होगा। अत: शोध कार्य द्वारा शिक्षकों का नेतृत्व व्यवहार को अधिक से अधिक अनुकूल बनाया जाना चाहिए, जिससे उनका पेशेवर सामंजस्य और अधिक से अधिक हो सके और शिक्षक समाज व देश के निर्माण में सहायक सिद्ध हों यही शोधार्थी का लक्ष्य है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची:-

1. भाई योगेन्द्रजीत (1977) शैक्षिक और विद्यालय प्रशासन, विनोद पुस्तक मंदिर आगरा।
2. माथुर, एस. एस. (1965) विद्यालय संगठन एवं स्वास्थ्य शिक्षा, रस्तौगी एण्ड कम्पनी मेरठ।
3. मलैया, विद्यावती के. सी. 1977 शिक्षा प्रशासन, एवं पर्यवेक्षण, मध्य प्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल।
4. शर्मा, आर0 ए0, (2011) अध्यापक – शिक्षा, एवं प्रशिक्षण तकनीकी आर0 लाल0 बुक डिपो, मेरठ।
5. शर्मा, आर.ए. (2002) शिक्षा प्रबन्धन-सूर्या पब्लिकेशन मेरठ।
6. Sharma, T.C. (2005), Teaching Learning Theory and Teacher's Education, Sarup and Sons, ISBN-B: 9788176255707.
7. Singh, R.P. (2011), Teacher Education Today, Shipra Publication, New Delhi, ISBN No: 978817541531.
8. सिंह, अरूण कुमार (2008), शिक्षा मनोविज्ञान, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद।
9. सुखिया, एस.पी (2006) विद्यालय प्रशासन संगठन एवं विनोद पुस्तक आगरा।
10. http://www.irphouse.com
11. hhttp/IJARP/v3-i1/2102
12. hhttps://www.researchgate.net/publication/316548126

सारणी1: शिक्षकों के नेतृत्व व्यवहार एवं उनके पेशेवर सामंजस्यके मध्य सहसम्बन्ध

Category	N	Mean	Σx^2 and Σy^2	Σxy	r- Value	df	Significance Level	interpretation
नेतृत्व व्यवहार	400	151.7	400573.6	117293.5	0.95	798	0.05=0.07	HO-1 rejected उच्च सकारात्मक सहसम्बन्ध
पेशेवर सामंजस्य	400	143.7	37358.4				0.01=0.09	

सारणी2 : शिक्षकों के उच्च औसत और निम्न नेतृत्व व्यवहार का उनके पेशेवर सामंजस्य पर मुख्य एवं अन्त: क्रियात्मक प्रभाव

Category Vairable	Good		Average		Poor	
Peshewar saman jasya	X_1	X^2	X_2	X^2	X_3	X^2
	1 – – 95	1 – – 95	1 – – 190	1 – – 190	1 – – 115	1 – – 115
	ΣX^1=14600	ΣX^2=2258858	ΣX_2=27710	ΣX^2=4058078	ΣX_3=16145	ΣX^2=2293763

****